RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15

अंक : 186

दि. 07.11.2025,

शुक्रवार

पाना : 04

किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

मनी लॉन्ड्रिंग केस में ईडी की बड़ी कार्रवाई, सट्टेबाजी प्रकरण में सुरेश रैना और शिखर धवन की ₹11.14 करोड़ की संपत्ति जब्त

(जीएनएस)। नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी एप '1xBet' से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में गुरुवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए पूर्व भारतीय क्रिकेटर सुरेश रैना और शिखर धवन की संपत्ति जब्त कर ली है। एजेंसी ने कुल 11.14 करोड़ की संपत्ति पर अस्थायी कुर्की का आदेश जारी किया है। इसमें रैना के 6.64 करोड़ के म्यूचुअल फंड निवेश और धवन की 4.50 करोड़ की अचल संपत्ति शामिल है। ईडी अधिकारियों के अनुसार, यह कार्रवाई धन शोधन निवारण अधिनियम (PMLA) के प्रावधानों के तहत की गई है। जांच में पाया गया कि दोनों क्रिकेटरों ने विदेशी कंपनियों से अनुबंध कर भारत में '1xBet' जैसे अवैध सट्टेबाजी प्लेटफॉर्म का प्रचार किया था। एजेंसी के अनुसार, इस प्रचार से खिलाड़ियों को भारी आर्थिक लाभ हुआ, जिसे ईडी ने मनी लॉन्ड्रिंग के दायरे में माना है। ईडी के सूत्रों के मुताबिक, '1xBet' एक विदेशी जुए और सट्टेबाजी का एप्लीकेशन है, जो भारत में ऑनलाइन सट्टेबाजी पर कानूनी प्रतिबंधों के बावजूद सक्रिय था। यह प्लेटफॉर्म देशभर में क्रिकेट, फुटबॉल और अन्य खेल आयोजनों पर ऑनलाइन दांव लगाने का माध्यम बना हुआ था। जांच में यह भी सामने आया है कि इस ऐप से कमाई गई रकम हवाला नेटवर्क के जरिए विदेशी खातों में भेजी जा रही थी।

एजेंसी ने इस मामले में पहले भी कई मशहूर हस्तियों से पूछताछ की थी, जिनमें क्रिकेटर युवराज सिंह, रॉबिन उथप्पा, अभिनेता सोनू सूद, पूर्व सांसद मिमी चक्रवर्ती, और बांग्ला फिल्म अभिनेता अंकुश हाजरा के नाम शामिल हैं। ईडी ने कई सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स से भी बयान दर्ज किए हैं, जिन्होंने इस ऐप का प्रचार किया था।

ईडी अधिकारियों ने बताया कि '1xBet' के प्रमोशनल कॉन्ट्रैक्ट्स के लिए विदेशी कंपनियों से जो रकम भारतीय खिलाड़ियों के खातों में आई, उसका स्रोत और ट्रांसफर का तरीका संदिग्ध पाया गया है। एजेंसी अब इस पैसे के प्रवाह और उससे जुड़े वित्तीय चैनलों की गहन जांच कर रही है। ईडी के एक प्रवक्ता ने कहा, "देश में अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी और उससे जुड़े वित्तीय अपराधों पर लगाम लगाना हमारी प्राथमिकता है। जिन लोगों ने इस तरह के प्लेटफॉर्म का प्रचार या सहयोग किया है, उन पर सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।"

सूत्रों का कहना है कि आने वाले दिनों में इस मामले में कुछ और खिलाड़ियों और कंपनियों को भी नोटिस भेजे जा सकते हैं। एजेंसी अब विदेशी सर्वरों और क्रिप्टो वॉलेट्स के जरिए हुई लेन-देन की भी जांच कर रही है।

यह मामला ऐसे समय में सामने आया है जब भारत में ऑनलाइन जुए और सट्टेबाजी पर केंद्र सरकार पहले ही कड़े कदम उठाने की दिशा में सक्रिय है। अब ईडी की यह कार्रवाई खेल जगत और डिजिटल प्रमोशन से जुड़ी हस्तियों के लिए एक कड़ा संदेश मानी जा रही है कि कानून के दायरे से बाहर कोई नहीं।

दोनों पर सट्टेबाजी एप '1xBet' के प्रचार का आरोप

तूफान 'कालमेघी' ने फिलीपींस को झकझोरा, सैकड़ों मौतें और लापता लोगों के बीच चारों ओर तबाही का मंजर

(जीएनएस)। मनीला। दक्षिण-पूर्व एशिया के समुद्री द्वीपसमूह फिलीपींस में इस वर्ष का सबसे भयावह तूफान 'कालमेघी' जब आया, तो अपने साथ वह विनाश का ऐसा तांडव लेकर आया जिसने पूरे देश को आपातकाल की स्थिति में पहुंचा दिया। गुरुवार को सरकार ने इस तूफान से हुई व्यापक तबाही के बाद पूरे देश में आपदा की स्थिति घोषित कर दी। आंकड़ों के अनुसार अब तक 114 लोगों की मौत हो चुकी है, 127 लोग अब भी लापता हैं और 82 गंभीर रूप से घायल हैं।

'कालमेघी' ने सबसे अधिक कहर मध्य फिलीपींस के सेबू द्वीप पर बरपाया, जहां अकेले 71 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है। स्थानीय प्रशासन ने राष्ट्रीय एजेंसियों के आधिकारिक आंकड़ों से परे जाकर 28 अतिरिक्त मौतों की सूचना दी है। अधिकांश लोग बाढ़ में बह गए, जबकि कई अपने घरों में फंसे रह गए। बचाव दल के अनुसार कई इलाके अब भी ऐसे हैं जहां पहुंचना लगभग असंभव है, क्योंकि सड़कें और पुल पूरी तरह जलमग्न या ध्वस्त हो चुके हैं।

तूफान की तीव्रता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 250 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली हवाओं ने दर्जनों कस्बों को चंद घंटों में मलबे में बदल दिया। पहाड़ी इलाकों से आया कीचड़ और मलबा कस्बों को लील गया, सैकड़ों घर और वाहन बाढ़ के साथ बह गए। शहरों में जहां-तहां बिजली के खंभे और पेड़ गिरे पड़े हैं। कई स्थानों पर संचार व्यवस्था पूरी तरह ठप हो गई है। स्थानीय प्रशासन ने इस स्थिति को "अभूतपूर्व आपदा" करार दिया है, जो बीते एक दशक की सबसे बड़ी प्राकृतिक त्रासदियों में से एक मानी जा रही है।

सेबू प्रांत में तो हालात इतने भयावह हैं कि करीब चार लाख लोग अपने घर छोड़ने को मजबूर हो गए हैं। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन एजेंसी ने बताया कि सेबू की 25 लाख आबादी में से एक बड़ा हिस्सा अब अस्थायी राहत शिविरों में रह रहा है। मृतकों में एक सैन्य हेलीकॉप्टर के छह चालक दल सदस्य भी शामिल हैं, जो राहत सामग्री पहुंचाने के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

राष्ट्रपति फर्डिनेंड मार्कोस जूनियर ने गुरुवार को देशव्यापी आपातकाल की घोषणा करते हुए कहा, "लगभग दस से बारह प्रांत इस आपदा की चपेट में हैं। यह केवल एक प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि मानवीय त्रासदी बन गई है। राहत और पुनर्वास के लिए सभी संसाधन झोंक दिए गए हैं।" उन्होंने सेना, तटरक्षक बल और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों से मदद लेने की भी घोषणा की। राष्ट्रीय मौसम विज्ञान एजेंसी ने चेतावनी दी है कि 'कालमेघी' अभी पूरी तरह थमा नहीं है। तूफान धीरे-धीरे पश्चिम की ओर बढ़ते हुए अब वियतनाम की तटीय सीमा की ओर जा रहा है। अनुमान है कि शुक्रवार सुबह तक यह वियतनाम के तट से टकराएगा, जिससे वहां भी भारी बारिश, बाढ़ और भूस्खलन की आशंका है। इसी के चलते थाईलैंड ने भी अपने कई प्रांतों में आपात चेतावनी जारी कर दी है।

फिलीपींस में 'कालमेघी' को स्थानीय तौर पर 'टिनो' नाम दिया गया है और यह इस वर्ष का 20वां उष्णकटिबंधीय चक्रवात है जिसने देश को प्रभावित किया है। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि इसकी तीव्रता और विनाशकारी प्रभाव इसे बीते वर्षों के सबसे खतरनाक तूफानों में शामिल कर देता है। राहत एजेंसियां लगातार मलबे में फंसे लोगों की तलाश में जुटी हैं, लेकिन मूसलाधार बारिश और टूटी सड़कों के कारण बचाव कार्य बाधित हो रहे हैं।

देश के कई हिस्सों में अब भी बाढ़ का संकट बना हुआ है। अस्पतालों में घायलों की भीड़ है और हजारों लोग भूख, प्यास और दवाइयों की कमी से जूझ रहे हैं। वियतनाम में सुरक्षा एहतियात के तहत पचास से अधिक उड़ानें रद्द कर दी गई हैं, जबकि फिलीपींस में अगले कुछ दिनों तक स्कूल, सरकारी दफ्तर और बंदरगाह बंद रखने का आदेश जारी किया गया है।

समुद्र का स्वदेशी प्रहरी 'इक्षक' अब भारतीय नौसेना का अभिन्न अंग, आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक नई छलांग

(जीएनएस)। नई दिल्ली। गुरुवार का दिन भारतीय नौसेना और देश की स्वदेशी रक्षा तकनीक के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हो गया जब कोच्चि नौसेना अड्डे पर अत्याधुनिक हाइड्रोग्राफिक सर्वे पोत 'इक्षक' को आधिकारिक रूप से नौसेना के बेड़े में शामिल कर लिया गया। यह घटना न केवल एक नए युद्धक जहाज के शामिल होने का प्रतीक थी, बल्कि आत्मनिर्भर भारत के उस संकल्प की भी उद्घोषणा थी, जो अब समुद्री सीमाओं की गहराइयों तक पहुंच चुका है।

इस ऐतिहासिक अवसर पर नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी ने पोत के कमीशनिंग क्रू को संबोधित करते हुए कहा, "इक्षक केवल एक जहाज नहीं, बल्कि भारत की तकनीकी क्षमता, समुद्री आत्मनिर्भरता और अटूट राष्ट्रीय विश्वास का प्रतीक है। मुझे विश्वास है कि इस पोत के नाविक अपने आदर्श वाक्य 'निर्भय वीर पथ प्रदर्शक' के अनुरूप निडरता और समर्पण के साथ समुद्रों की असीमित सीमाओं में भारत का गौरव बढ़ाएंगे।"

'इक्षक' नाम अपने आप में एक दर्शन समेटे हुए है — संस्कृत का यह शब्द 'मार्गदर्शक' का अर्थ रखता है, जो इसकी भूमिका को स्पष्ट करता है। यह जहाज न केवल समुद्री मार्गों का सर्वेक्षण करेगा, बल्कि भारत की सामरिक शक्ति को दिशा देने वाला प्रहरी भी बनेगा। इसे कोलकाता स्थित गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (जीआरएसई) लिमिटेड ने पूरी तरह स्वदेशी तकनीक से तैयार किया है, जिसमें लगभग 80 प्रतिशत सामग्री भारतीय निर्माताओं द्वारा उपलब्ध कराई गई है। यह आंकड़ा न केवल आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि है, बल्कि भारतीय एमएसएमई क्षेत्र की तकनीकी दक्षता और नवाचार का प्रमाण भी है।

'इक्षक' को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि यह समुद्र की गोद में न केवल सर्वेक्षण कर सके बल्कि संकट के समय मानवता की सेवा में भी तत्पर रह सके। यह पोत आपदा राहत और मानवीय सहायता अभियानों (HADR) में अस्पताल के रूप में कार्य करने की क्षमता रखता है। इतना ही नहीं, यह भारतीय नौसेना का पहला ऐसा हाइड्रोग्राफिक पोत है जिसमें महिला अधिकारियों के लिए अलग और पूर्ण सुविधा युक्त आवास की व्यवस्था की गई है — यह नौसेना में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और समान अवसरों की दिशा में भी एक ऐतिहासिक कदम है।

तकनीकी दृष्टि से 'इक्षक' अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है। इसमें हाई-रिजॉल्यूशन मल्टी-बीम इको साउंडर, ऑटोनॉमस अंडरवाटर व्हीकल (AUV), रिमोटली ऑपरेटेड व्हीकल (ROV) और चार सर्वे मोटर बोट्स (SMB) जैसी उन्नत प्रणालियाँ स्थापित हैं, जो इसे समुद्र की सतह से लेकर गहराई तक हर स्तर पर सटीक सर्वेक्षण करने में सक्षम बनाती हैं। यह पोत तटीय जलक्षेत्रों, बंदरगाहों और रणनीतिक समुद्री मार्गों का नक्शा तैयार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। रक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि 'इक्षक' का शामिल होना भारतीय नौसेना की जल सर्वेक्षण क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि करेगा। अब नौसेना के पास न केवल समुद्री सीमाओं की निगरानी के लिए एक और शक्तिशाली साधन है, बल्कि यह भारत की वैश्विक समुद्री उपस्थिति को भी नई दिशा प्रदान करेगा। इससे हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की रणनीतिक स्थिति और मजबूत होगी और पड़ोसी देशों के साथ समुद्री सहयोग और भी प्रभावी रूप से संचालित किया जा सकेगा।

'इक्षक' का जलावतरण उस भविष्य की झलक दिखाता है जहां भारत न केवल रक्षा उपकरणों का उपभोक्ता होगा, बल्कि निर्माता और तकनीकी मार्गदर्शक भी बनेगा। यह केवल एक जहाज नहीं, बल्कि राष्ट्र के आत्मसम्मान, सामरिक क्षमता और तकनीकी स्वाधीनता का तैरता हुआ प्रतीक है — जो आने वाले वर्षों में भारत के समुद्री इतिहास में स्वर्ण युग की प्रस्तावना रचेगा।

अपने पुराने बैंक खाते में पैसे जमा करके भूल गए?

जो आपका है उसे वापस दिलाने में आरबीआई आपकी मदद करेगा।

आपके बैंक के निष्क्रिय खाते (2 वर्ष से ज़्यादा और 10 वर्ष तक असक्रिय) में जमा पैसे / दावा न की गई जमा राशि (10 वर्ष से अधिक) को आरबीआई के डीईए फंड में ट्रांसफर कर दिया जाता है। आप या आपके क़ानूनी वारिस उसे कभी भी वापस ले सकते हैं।

आपके पैसे वापस पाने के 3 आसान चरण

1. आपके बैंक की किसी भी शाखा में जाएं, भले ही वो आपकी नियमित शाखा न हो।
2. केवाईसी दस्तावेजों (आधार, पासपोर्ट, मतदाता पहचान पत्र या ड्राइविंग लाइसेंस) के साथ फॉर्म जमा करें।
3. सत्यापन के बाद ब्याज समेत, यदि है तो, अपने पैसे वापस पाएं।

आपके दावा न किए गए पैसे के बारे में जानने के लिए

आपके बैंक की वेबसाइट पर खोजें या आरबीआई के UDGAM पोर्टल (https://udgam.rbi.org.in) पर देखें, जिसमें फ़िलहाल 30 बैंक शामिल हैं।

दावा न की गई संपत्ति के संबंध में आयोजित विशेष शिविरों में जाएं, जिसे देशभर के सभी ज़िलों में अक्तूबर से दिसंबर 2025 के बीच लगाए जाएँगे।

अधिक जानकारी के लिए https://rbikehtahai.rbi.org.in देखिए
प्रतिक्रिया के लिए rbikehtahai@rbi.org.in पर लिखिए

क्यूआर कोड स्कैन कीजिए

आधिकारिक व्हॉट्सऐप नंबर 99990 41935

जनहित में जारी
भारतीय रिज़र्व बैंक
RESERVE BANK OF INDIA
www.rbi.org.in

संपादकीय

बिना छात्र स्कूल

निस्संदेह, शिक्षा मंत्रालय की वह रिपोर्ट परेशान करने वाली है, जिसमें बताया गया है कि बीते शिक्षा सत्र में देश के आठ हजार सरकारी स्कूलों में किसी बच्चे ने दाखिला नहीं लिया। लेकिन विडंबना यह है कि इन स्कूलों में बीस हजार शिक्षक तैनात हैं। वहीं देश में हजारों स्कूल ऐसे हैं, जहां सिर्फ एक शिक्षक के भरोसे सभी कक्षाएं चल रही हैं। वैसे केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार तीस विद्यार्थियों पर एक शिक्षक अनिवार्य रूप से होना चाहिए, लेकिन इसकी अनदेखी करके हर जगह विसंगतियां नजर आती हैं। यही वजह है कि शैक्षणिक सत्र 2024-25 में आठ हजार स्कूलों में एक भी छात्र ने दाखिला नहीं लिया। यहां यह तथ्य उल्लेखनीय है कि बिना दाखिले वाले स्कूलों की सर्वाधिक संख्या पश्चिम बंगाल में है। यह संख्या 3,812 है, जो बेहद चौंकाने वाली बात है। स्थिति का दूसरा परेशान करने वाला तथ्य यह है कि इसी राज्य के बिना दाखिले वाले स्कूलों में बाकायदा करीब अठारह हजार शिक्षक तैनात हैं। कमोबेश तेलंगाना की स्थिति भी चिंताजनक है, जहां 2,245 स्कूल जीरो एडमिशन वाले हैं तथा एक हजार से ज्यादा शिक्षक यहां तैनात हैं। वहीं भाजपा शासित राज्य मध्य प्रदेश, जिसका स्थान इस सूची में तीसरा है, वहां 463 स्कूलों में एक भी छात्र ने दाखिला नहीं लिया। बाकायदा 223 शिक्षक इन जीरो एडमिशन वाले स्कूलों में तैनात हैं। वैसे चौंकाने वाली बात यह है कि शैक्षणिक सत्र 2023-24 में इस बार के मुकाबले पांच हजार स्कूल अधिक ऐसे थे, जहां कोई विद्यार्थी दाखिल नहीं हुआ था। एक विसंगति यह भी है कि स्कूली शिक्षा राज्य सरकारों के अधीन होती है, अतः केंद्र सरकार का दखल इसमें नहीं होता। लेकिन राज्य सरकार व शिक्षा विभाग की नीतियों पर सवाल तो उठता ही है। इसके बावजूद केंद्रीय शिक्षा विभाग को निर्देश दिए गए हैं कि वे शून्य दाखिले की परंपरा रोकने के लिये यथासंभव प्रयास करते रहें।

बहरहाल, यहां एक सवाल यह भी है कि बिना दाखिले वाले स्कूलों के शिक्षक छात्रों को स्कूल में लाने के व्यक्तिगत प्रयास क्यों नहीं करते? वैसे कुछ राज्यों के शिक्षा विभाग ने इस दिशा में कुछ कदम भी उठाए हैं। जहां शिक्षा विभाग ने स्कूलों में छात्रों की कम संख्या को देखते हुए उनका समायोजन अधिक छात्र संख्या वाले स्कूलों में करके संतुलन साधने का प्रयास किया है। यहां हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व केंद्रशासित प्रदेश चंडीगढ़ आदि के शिक्षा विभाग की सराहना करनी होगी, जहां एक भी स्कूल जीरो एडमिशन वाला नहीं था। दूसरी ओर उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग ने राज्य भर के जीरो एडमिशन वाले 81 स्कूलों की मान्यता रद्द करने की प्रक्रिया आरंभ की। इसका मानक यह होगा कि जहां पिछले लगातार तीन शैक्षणिक वर्षों में कोई छात्र दाखिल न हुआ हो। एक परेशान करने वाला आंकड़ा यह भी है कि देश के एक लाख स्कूलों में केवल एक ही शिक्षक सभी कक्षाओं के छात्रों को पढ़ा रहा है, जिसमें करीब तैंतीस लाख छात्र अध्ययनरत हैं। जाहिर है वे छात्र क्या पढ़ रहे होंगे और उनका भविष्य क्या होने जा रहा है। यहां विचारणीय प्रश्न यह भी है कि छात्रों का सरकारी स्कूलों से मोहभंग क्यों हो रहा है? यह समाज विज्ञानियों के लिए अध्ययन का विषय होना चाहिए कि कम फीस व पर्याप्त शिक्षक व शिक्षण व्यवस्था के बावजूद छात्र इन स्कूलों में क्यों पढ़ना नहीं चाहते? यह विडंबना ही है कि जिन संस्थानों में नौकरी सुरक्षित और सुविधाएं पर्याप्त होती हैं, वहां कर्मचारी अपना बेहतर प्रदर्शन करते नजर नहीं आते। जबकि निजी स्कूलों में कम वेतन और कम सुविधाओं के बावजूद कर्मचारी जमकर मेहनत करते हैं। वहां शिक्षकों का खूब दोहन होता है लेकिन कक्षाएं छात्र-छात्राओं से भरी होती हैं। विडंबना यह भी कि अभिभावक ज्यादा फीस देकर भी संतुष्ट नजर आते हैं। अक्सर कहा जाता है कि जिस दिन सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों व नेताओं के बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ने लगेंगे, उस दिन सरकारी स्कूलों की दशा-दिशा सुधर जाएगी। फिलहाल देश में लाखों स्कूलों की स्थिति असंतोषजनक है और इस दिशा में गंभीर प्रयास की मांग की जाती है।

सार्ध शताब्दी के अवसर पर वंदे मातरम् के जयघोष से भारत भूमि को कोटि-कोटि वंदन...

"आज माननीय नरेन्द्रभाई के नेतृत्व में हमें विकास की जो नई ऊंचाइयां हासिल हो रही हैं, उसमें देश के प्रत्येक नागरिक के मन में एक ही आकांक्षा है कि हमारी भारत माता हमेशा सुखदा और वरदा बनी रहे। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के इस संकल्प-मार्ग पर हमें ऐसे दूरदर्शी प्रधानमंत्री का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जो वंदे मातरम् के प्रत्येक शब्द को साकार रूप देकर एक नए युग की रचना कर रहे हैं।

भूपेंद्रभाई पटेल
लेखक
गुजरात के मुख्यमंत्री

हम आज देशभक्ति के एक अभूतपूर्व दौर में जी रहे हैं। स्वतंत्रता से पहले जैसा जोश और देशभक्ति का वातावरण था, वैसा ही वातावरण हमारे राष्ट्रभक्त प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्रभाई द्वारा प्रारम्भ किए गए 'आत्मनिर्भर भारत' और 'राष्ट्र प्रथम' जैसे प्रेरणादायी अभियानों के कारण आज फिर से निर्मित हो रहा है। इसी कड़ी में आज देशभक्ति के एक और स्मरण-पर्व को मनाने की घड़ी आ गई है। 1875 में रचित हमारा वंदे मातरम् गीत 150 वर्ष पूरे कर रहा है। यह गीत पहली बार बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जी द्वारा लिखित आनंद मठ उपन्यास में प्रकाशित हुआ था, लेकिन इस गीत ने देश की चेतना को जगाकर अपने इस सुदीर्घ गायन काल में मानों राष्ट्रभक्ति की प्राणवायु जैसी ऊर्जा उत्पन्न की।

इस गीत में अंतर्निहित उदात्त देशभक्ति और ऊर्जस्विता ने पूरे स्वाधीनता संग्राम में सतत जोश भरने का कार्य किया। इतिहासकारों का मत है कि चाहे स्वतंत्रता संग्राम हो, स्वदेशी आंदोलन हो या फिर सत्याग्रह की तैयारियाँ जहाँ भी वंदे मातरम् का स्वर उठता, वहाँ तत्काल देशभक्ति का ऊर्जावान वातावरण बन जाता है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी अनेक नेता इस गीत की प्रत्येक पंक्ति को अपने जीवन से चरितार्थ करते रहे। महर्षि अरविन्द हों या भगतसिंह, सभी देशभक्त इस गीत के गूंजते स्वर में अपने जीवन की सर्वोच्च सार्थकता अनुभव करते थे।

इस राष्ट्र गीत की महिमा ही यह है कि ये आज भी उतना ही प्रासंगिक, उतना ही ताजगीभरा और प्रेरणादायी प्रतीत होता है। आधुनिक युग के लोकनायक, हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी जब किसी सभा को संबोधित करने से पूर्व 'वंदे मातरम्' का जयघोष करवाते हैं, तब मानो पूरा सभामंडप देशभक्ति की एक नई लहर से भर उठता है। यह गीत भारतीयता

की भावना का सजीव प्रतीक है। इस गीत के प्रत्येक शब्द से देश की सुजलाम् सुफलाम् धरा और भारत माता के प्रति भक्ति झलकती है। वंदे मातरम् का स्वर कानों में पड़ते ही हृदय में मातृ भक्ति का भाव जागृत होता है, मानो हम स्वयं भारत माता की आराधना कर रहे हों। इस गीत के शौर्य और पराक्रम की अनुभूति से तन-मन का प्रत्येक कण रोमांचित हो उठता है।

यह हमारा सौभाग्य है कि नरेन्द्रभाई ने जब से देश का नेतृत्व संभाला है, तब से मानो वंदे मातरम् के शब्दों ने नवजीवन पाकर एक बार पुनः अपनी दिव्य आभा बिखेर दी हो। ऐसा लगता है कि इस गीत में निहित देशभक्ति को माननीय नरेन्द्रभाई ने मानो साकार रूप दे दिया है। एक गीत के शब्दों को राष्ट्र के जीवन में कैसे उतारा जा सकता है इसके कई प्रेरणादायी उदाहरण उनके कार्य और परिश्रम के रूप में आज स्पष्ट दिखाई देते हैं। स्वाधीनता संग्राम के दौरान 'आनंदमठ' उपन्यास में जिन संन्यासियों के संघर्ष का वर्णन था, आज नरेन्द्रभाई की तपस्या और त्याग उसी गीत की पंक्तियों को चरितार्थ करते प्रतीत होते हैं। वह ऐतिहासिक क्षण याद कीजिए जब कश्मीर के लाल चौक से नरेन्द्रभाई ने 'त्वं हि दुर्गा' की भावना पूरे देश में जागृत कर दी थी।

मा भारती को सच्चे हृदय से अर्पित वंदन ही 'वंदे मातरम्' है। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह अमर गीत स्वातंत्र्य-संग्राम के दिनों में राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रप्रेम के उन्मेष का गगनभेदी घोष बनकर उभरा था। इसके प्रत्येक शब्द, और उन शब्दों से व्यक्त होने वाली प्रत्येक तेज-किरण ने स्वतंत्रता सेनानियों के हृदय में ऐसा प्रज्वलित संकल्प भरा कि वे ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें उखाड़ फेंकने को उद्यत हो उठे। सन् 1875 में लिखे गए इस गीत के इस वर्ष 150 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। यह तथ्य स्वयं रेखांकित करता है कि वंदे मातरम् मात्र एक गीत नहीं या शब्दों का कोई जटिल संयोजन नहीं बल्कि भारत-माता को समर्पित एक परम-पूज्य वंदन और एक करुणा से ओत-प्रोत नमन है।वंदे मातरम् गीत की सार्ध शताब्दी के अवसर पर मैं भी 7 करोड़ गुजरातियों की ओर से इस गीत को वंदन करते हुए मां भारती के प्रति कृतज्ञता और आदर व्यक्त करता हूं। वंदे मातरम् के 150वें वर्ष को एक विशेष, स्मरणीय वर्ष के रूप में मनाने का जो दूरदर्शी विजन भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी ने देश को प्रदान किया है, वह उनके व्यक्तित्व में निहित राष्ट्र चेतना का ही उदात्त स्वरूप है। आदरणीय मोदी जी की प्रेरणा से आरम्भ हो रहे वंदे मातरम् गीत की 150वीं वर्षगाँठ के आयोजन में माँ भारती की संतानों के कल्याण का भाव अंतर्निहित है, ताकि वे गर्व से अपना मस्तक ऊंचा कर सम्मान के साथ जीवन जी सकें।

स्वतंत्र भारत के इतिहास में ऐसा नेतृत्व विरले ही देखने को मिलता है, जिसने अपने प्रत्येक कर्म, प्रत्येक संकल्प और प्रत्येक श्वास को राष्ट्र के चरणों में अर्पित कर दिया हो। यह कहते हुए मुझे अपार गर्व होता है कि हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी ऐसे ही विरल नेतृत्व की प्रथम पंक्ति में प्रतिष्ठित हैं। मोदीजी के प्रत्येक कार्य के केन्द्र में सदैव 'राष्ट्र प्रथम' की ही भावना रही है। महान क्रांतिवीर 'श्यामजी कृष्ण वर्मा' को सच्चे अर्थ में श्रद्धांजलि देने के लिए मांडवी में क्रांति तीर्थ की स्थापना करना हो या स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासियों के महान बलिदान के प्रतीक 'भगवान बिरसा मुंडा' के महत्व को दुनिया के सामने लाने की बात हो या फिर राष्ट्रीय एकता के पर्याय सरदार वल्लभभाई पटेल को 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' और 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में स्मरणांजलि देने की बात हो, मोदी जी के प्रत्येक कार्य में हमें केवल एक ही भाव की अनुभूति होती है, और वह है 'वंदे मातरम्'।

मानो इस वंदे मातरम् गीत का यशगान करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी ने भारतीय राजनीति को एक नई दिशा दी और विकास के नए युग का शुभारंभ किया। जब मोदी जी गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने पंचशक्ति का उल्लेख करते हुए जल प्रबंधन जैसे विषयों को प्राथमिकता दी, क्योंकि वंदे मातरम् से उन्हें यह प्रेरणा मिली थी कि यह धरती शस्यश्यामला अर्थात् अन्नपूर्णा और समृद्धि से सम्पन्न भूमि है। उन्होंने प्रधानमंत्री बनने के बाद भी कन्या शिक्षा और समग्र शिक्षा को एक नई दिशा देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई, क्योंकि मोदी साहब जीवन भर 'वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्, अमलाम् अतुलाम्...' पंक्तियों को गुनगुनाते रहे हैं। इन पावन शब्दों में निहित अपार शक्ति और प्रेरणा से आरंभ हुई कन्या शिक्षा की यात्रा आज चंद्रमा पर स्थापित शिवशक्ति पॉइंट तक अपने विस्तार और उपलब्धि का संदेश देती है।

हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि देश के लिए दिन-रात निरंतर परिश्रम करने वाले प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी इस वंदे मातरम् गीत को केवल गाते नहीं, बल्कि उसे अपने जीवन में धारण करते हुए जीते हैं। 'त्वं हि प्राणा शरीरे' की अनुभूति उनके प्रत्येक कार्य में दिखाई देती है, मानो उनकी हर सांस मातृभूमि को अर्पित एक जीवंत संकल्प-स्तुति बन गई हो। यही उनका आदर्श जीवन आज करोड़ों देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। वहीं, जब राष्ट्र के साहस और शौर्य को प्रदर्शित करने का समय आया तो कायर शत्रुओं को 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से यह दिखा दिया गया कि यह राष्ट्र ही हमारे लिए सर्वोच्च है और हमने वर्षों से इसे 'बहुबलधारिणीम् रिपुदलवारिणीम्' कहते हुए नमन किया है। यह देशभक्ति ही इस गीत की वो प्राण शक्ति है जिसने हमें दसों दिशाओं से साहस, संकल्प और ऊर्जा से अभिसिंचित किया है।

आज माननीय नरेन्द्रभाई के नेतृत्व में हमें विकास की जो नई ऊंचाइयां हासिल हो रही हैं, उसमें देश के प्रत्येक नागरिक के मन में एक ही आकांक्षा है कि हमारी भारत माता हमेशा सुखदा और वरदा बनी रहे। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के इस संकल्प-मार्ग पर हमें ऐसे दूरदर्शी प्रधानमंत्री का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जो वंदे मातरम् के प्रत्येक शब्द को साकार रूप देकर एक नए युग की रचना कर रहे हैं। माँ जगतजननी और हमारी भारत माता हम सभी को ऐसी शक्ति प्रदान करें कि जब 2047 में आज़ादी के 100 वर्ष पूर्ण हों तब नरेन्द्रभाई जिस उत्साह, जिस ऊर्जा और जिस गर्व से हमसे जयघोष करवाते हैं हम भी उसी गौरव के साथ विश्व के समक्ष जयघोष कर सकें और गा सकें...'वंदे मातरम्...'

प्रेरणा

अहंकार मर्दन की कथा: जब श्रीकृष्ण ने रूप, शक्ति और वेग का गर्व मिटाया

द्वारका नगरी उस समय अपनी अद्भुत आभा से चमक रही थी। समुद्र तट पर बनी वह स्वर्णमयी नगरी मानो देवलोक का ही प्रतिरूप थी। वहाँ के राजमहल में श्रीकृष्ण अपने सिंहासन पर रानी सत्यभामा के साथ विराजमान थे। चारों ओर सुख, समृद्धि और वैभव की छटा बिखरी हुई थी। उस दिन दरबार में संगीत और हास्य का वातावरण था। सत्यभामा, जो अपनी अप्रतिम सुंदरता के लिए जानी जाती थीं, अपने सौंदर्य पर गर्व से भरी हुई थीं। वे जानती थीं कि श्रीकृष्ण उन्हें अत्यंत प्रिय मानते हैं, और इसी स्नेह में कभी-कभी उनके मन में रूप का अभिमान सिर उठाने लगता था।

बातों-बातों में सत्यभामा ने मुस्कराते हुए श्रीकृष्ण से पूछा — "प्रभु, त्रेता युग में माता सीता का सौंदर्य कितना अद्वितीय रहा होगा? क्या वे मुझसे भी अधिक सुंदर थीं?" यह प्रश्न सुनकर श्रीकृष्ण के होंठों पर हल्की मुस्कान आ गई। वे जानते थे कि यह प्रश्न जिज्ञासा से नहीं, बल्कि भीतर छिपे अहंकार से उपजा है। सत्यभामा को अपने रूप का गर्व हो गया है।

उसी समय गरुड़ जी अपने पंखों की गति पर गर्व कर रहे थे। उन्होंने मन में सोचा — "तीनों लोकों में मुझ-सा तेज और तीव्र कोई नहीं। स्वयं नारायण के वाहन के रूप में मुझे कौन पार कर सकता है?"

दूसरी ओर सुदर्शन चक्र भी अपने अद्भुत सामर्थ्य पर गर्व कर रहा था। वह सोच रहा था — "संसार में ऐसा कौन है जो मेरी धार और शक्ति का सामना कर सके? मैं तो स्वयं प्रभु का शस्त्र हूँ।"

श्रीकृष्ण सब जान रहे थे। वे मुस्कुराए। उनकी दृष्टि करुणामयी थी, किंतु गहराई में एक योजना का रहस्य छिपा था। उन्होंने निश्चय किया कि अब तीनों का अहंकार समाप्त करने का समय आ गया है।

श्रीकृष्ण ने गरुड़ को बुलाया और कहा — "गरुड़, जाओ, मेरे प्रिय भक्त हनुमान को यहाँ द्वारका लेकर आओ। उन्हें कहना कि मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।" गरुड़ जी तुरंत अपने विशाल पंख फैलाकर उड़ चले। आकाश में उनकी गति इतनी तीव्र थी कि बादल भी उनसे दूर हटते जाते थे। वे सोच रहे थे — "देखना, यह वानर तो मेरी गति की बराबरी भी नहीं कर पाएगा।"

वे किष्किंधा के पास पहुँचे और हनुमान जी को ध्यानमग्न अवस्था में पाया। गरुड़ ने नम्रता से कहा — "हे वानरश्रेष्ठ, द्वारका में भगवान श्रीकृष्ण आपको बुला रहे हैं, तुरंत चलिए।"

हनुमान जी ने आँखे खोलीं, मुस्कुराए और बोले — "आप चलिए, मैं आता हूँ।"

गरुड़ मन ही मन बोले — "यह वृद्ध वानर कब पहुँचेगा द्वारका? जब तक यह पहुँचेगा, मैं तो कई बार वहाँ से लौट भी आऊँगा।"

गरुड़ ने अपनी पूरी शक्ति लगाई और पवन से भी तेज उड़ते हुए द्वारका लौट आए। जैसे ही वे महल में पहुँचे, तो देखा — भगवान श्रीकृष्ण सिंहासन पर बैठे हैं और उनके चरणों में हनुमान जी पहले से ही बैठे हैं, folded hands के साथ प्रभु का ध्यान कर रहे हैं।

गरुड़ की आँखें फैल गईं। वे अवाक रह गए। वे सोच भी नहीं पा रहे थे कि ऐसा कैसे संभव हुआ। वे तो प्रकाश की गति से भी तेज उड़कर आए थे, फिर यह हनुमान उनसे पहले कैसे पहुँच गए? उसी क्षण उनका वेग-अहंकार जलकर भस्म हो गया। उन्होंने सिर झुका दिया और मौन खड़े रहे।

श्रीकृष्ण ने हनुमान को प्रेम से देखा और पूछा — "प्रिय भक्त, तुम बिना अनुमति के भीतर कैसे आए?"

हनुमान मुस्कुराए, उनके होंठों पर भक्ति की सरलता थी। उन्होंने कहा — "प्रभु, द्वार पर जो आपका चक्र था, उसने मुझे रोकने की कोशिश की। मैं उसे अपने साथ ले आया।"

सभी आश्चर्यचकित रह गए। हनुमान ने अपने मुख से सुदर्शन चक्र को बाहर निकाला। सुदर्शन लज्जा से झुक गया। उसकी धार, जो कभी गर्व से चमकती थी, अब विनम्रता से झुक गई। उसकी शक्ति-अहंकार की ज्वाला उसी क्षण शांत हो गई।

सत्यभामा यह दृश्य देख रही थीं। तभी हनुमान ने उनकी ओर देखा और बोले — "प्रभु, आज सीता माता के स्थान पर आपके साथ यह दासी क्यों बैठी हैं?"

सत्यभामा का चेहरा पीला पड़ गया। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। उन्हें समझ आ गया कि यह रूप नहीं, भक्ति और पवित्रता ही वास्तविक सौंदर्य है। माता सीता का स्थान किसी और के लिए नहीं हो सकता। उनका रूप तो तप, त्याग, मर्यादा और भक्ति से बना है, जिसे कोई छू भी नहीं सकता।

तीनों — सत्यभामा, गरुड़ और सुदर्शन — प्रभु के चरणों में गिर पड़े। उनका गर्व मिट गया, उनके हृदय का आवरण हट गया, और भीतर से भक्ति का प्रकाश फूट पड़ा।

श्रीकृष्ण ने उन्हें उठाया और स्नेह से कहा — "अहंकार वह पर्दा है जो आत्मा और परमात्मा के बीच आ जाता है। जब तक 'मैं' जीवित है, तब तक 'प्रभु' छिपे रहते हैं। जब 'मैं' मिट जाता है, तभी प्रभु प्रकट होते हैं। रूप, बल या वेग — ये सब तभी दिव्य बनते हैं जब उनमें अहंकार न हो।"

द्वारका का वातावरण एक बार फिर शांत और दिव्य हो गया। सत्यभामा ने विनम्र होकर कहा — "प्रभु, अब मैं जान गई कि रूप का अहंकार सबसे बड़ा अंधकार है। मैं आपके चरणों में ही अपना सारा सौंदर्य, गर्व और अभिमान अर्पित करती हूँ।"

श्रीकृष्ण मुस्कुराए। उनकी आँखों में करुणा थी। हनुमान ने प्रभु के चरणों में सिर झुकाया और गद्गद स्वर में बोले — "हे नाथ, जिस क्षण मन से 'मैं' समाप्त होता है, उसी क्षण आपका साक्षात्कार होता है।"

उस दिन द्वारका में केवल एक शिक्षा गूँज रही थी — "अहंकार मिटे तो ईश्वर मिले।"

और तीनों के जीवन में उस क्षण से केवल एक ही भाव रह गया — पूर्ण समर्पण, शुद्ध भक्ति और निर्मल विनम्रता।

पंथनिरपेक्षता का दिखावटी चेहरा, जेडी वेंस का पत्नी उषा के बारे में दिया गया बयान बहुत चर्चा में क्यों?

पिछले दिनों अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस का पत्नी उषा वेंस के बारे में दिया गया एक बयान बहुत चर्चा में रहा। उनकी पत्नी उषा भारतीय मूल की हैं। विवाह भले ही उन्होंने वेंस से किया हो, वह मानती हिंदू धर्म को ही हैं। वेंस ने कहा कि उन्हें लगता है कि उषा एक न एक दिन ईसाई धर्म अपना लेंगी। वह उनके साथ चर्च भी जाती हैं और ईसाइयत में रुचि भी रखती हैं। वेंस ने यह भी बताया कि उनके बच्चों को ईसाई धर्म में दीक्षित किया गया है। वे उन्हीं तौर-तरीकों से पाले जा रहे हैं। इस संदर्भ में कुछ साल पहले शाहरुख खान की पत्नी गौरी खान की ओर से दिया गया यह वक्तव्य याद आ गया कि वह हिंदू हैं, लेकिन उनका बेटा आर्यन इस्लाम को मानता है। इंटरफेथ शादियों में ऐसा हो सकता है कि पिता एक धर्म को मानता हो और मां किसी और धर्म को, लेकिन बच्चों के साथ मुसीबत यह होती है कि उन्हें चुनाव का कोई अधिकार नहीं दिया जाता। जन्मते ही उन पर माता-पिता का धर्म लाद दिया जाता है। प्रायः उनके नाम भी वैसे ही रखे जाते हैं। कई बार नाम फर्क भी हो सकते हैं, जैसे शाहरुख के बेटे का नाम आर्यन या जेडी वेंस के बेटे का नाम विवेक है।

हमें गलतफहमी है कि पश्चिम में लोग सही मायने में पंथनिरपेक्ष होते हैं। वे अपना मजहब किसी पर लादते नहीं हैं। एक ही घर में अलग-अलग पंथों को मानने वाले लोग रह सकते हैं और राज्य का कोई मजहब नहीं होता। वास्तविकता में ऐसा है नहीं। यदि ऐसा होता तो अमेरिकी राष्ट्रपतियों को बाइबिल पर हाथ रखकर शपथ क्यों लेनी पड़ती? क्यों इटली की प्रधानमंत्री मेलोनी को कहना पड़ता कि वे ईसाई हैं। जेडी वेंस के बयान को इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए। वे शायद ट्रंप के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति बनने के लिए कैथोलिक बहुल अमेरिका को खुश करना चाहते हैं। जब वेंस उपराष्ट्रपति बने थे तो भारतीय लोग बड़े खुश हुए थे कि चलो उनकी पत्नी का भारत से कुछ रिश्ता है।

उपराष्ट्रपति बनने के बाद वे भारत भी आए और दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर भी गए। न जाने क्यों जब भी किसी भारतीय मूल के व्यक्ति को कोई बड़ा पद मिलता है या उसे कोई सफलता हासिल होती है तो हम उसे अपने ही चश्मे से देखने लगते हैं। सोचते हैं कि अपनी जड़ों के कारण यह व्यक्ति भारत के लिए भी कुछ अच्छा करेगा, लेकिन अक्सर ऐसा होता नहीं है। राष्ट्रपति पद की डेमोक्रेटिक उम्मीदवार कमला हैरिस के लिए भारत में बड़ी प्रार्थना की गई थी। वे बाइडेन प्रशासन में उपराष्ट्रपति थीं। हम भूल गए कि वे अतीत में किस तरह भारत विरोधी बयान दे चुकी हैं। हमें याद रखना चाहिए कि जो विदेशी नागरिक है, वह अपने ही देश को प्राथमिकता देगा, भले ही उसकी जड़ें भारत में रही हों।

मजहबी कारणों से इस धरती पर जितने लड़ाई-झगड़े और खून—खराबा हुआ है, उसकी कल्पना करना मुश्किल है। इस लड़ाई-झगड़े के पीछे मूल सोच यह रहता है कि हमारा मजहब दूसरे से श्रेष्ठ है। इसलिए जब तक यह पूरी दुनिया ही हमारे मजहब के झंडे तले नहीं आ जाती, तब तक हम चैन से नहीं बैठेंगे। मतांतरण पर अरबों—खरबों खर्च इसीलिए किए जाते हैं। जो लोग विविधता को सेलिब्रेट करते हैं, वही यह भी चाहते हैं कि दुनिया में सिर्फ हमारी पसंद का ही धर्म रहना चाहिए। उन्हें लगता है कि ऐसा होने पर ही दुनिया जीने के काबिल रहेगी। एक लड़की का दशकों पहले अमेरिका में रहने वाले एक लड़के से विवाह हुआ। लड़की हिंदू थी, लड़का ईसाई। लड़के ने कहा कि उसकी कोई और शर्त नहीं है, सिवाय इसके कि लड़की ईसाई बन जाए। लड़की ने ऐसा ही किया। साथ में पढ़ने वाली एक महिला ने एक मुस्लिम से विवाह किया। उसने धर्म नहीं बदला, लेकिन उसके दोनों बच्चे पति के धर्म को ही मानने वाले बने। एक मुसलमान लड़की स्विट्जरलैंड में उच्च पद पर काम करती थी। वह दक्षिण अफ्रीका से आई थी। उसका इंग्लैंड के एक लड़के से प्रेम हो गया।

जब दोनों को लगा कि विवाह कर लेना चाहिए तो लड़की ने कहा कि उनके बच्चे मुसलमान ही होंगे। क्या ऐसे विवाह सच में प्रेम विवाह हैं? आम तौर पर लोग अपनी आने वाली पीढ़ी को उसी रूप में देखना चाहते हैं, जैसे वे खुद हैं। साफ है कि बातें भले ही पंथनिरपेक्षता और सारे धर्मों का सम्मान करने को लेकर की जाएं, चाहत अपने धर्म के प्रसार की ही होती है। दुनिया में कोई और समूह इतने बड़े नहीं हैं, जितने धार्मिक समूह। इनके हिस्से बनकर हम ताकतवर महसूस करते हैं, क्योंकि कोई भी अकेला रहकर जी नहीं सकता। इसीलिए सब किसी न किसी धर्म का हिस्सा बनना चाहते हैं। जो लोग खुद को नास्तिक कहते हैं वे भी कई बार बेहद कट्टर साबित होते हैं। उदाहरण के तौर पर हिटलर और जिन्ना का नाम लिया जाता है।

जेडी वेंस हों या ट्रंप, वे किसी न किसी रूप में मेक अमेरिका ग्रेट अगेन कहते हुए अपने धर्म को श्रेष्ठ साबित करना चाहते हैं। वेंस की ओर से अपनी पत्नी के धर्म बदलने की चाह के पीछे यही मान्यता दिखती है कि जो धर्म पति का हो, वही पत्नी का होना चाहिए। उषा वेंस क्या करती हैं, यह तो भविष्य ही बताएगा, लेकिन संभव है कि वे पति की राष्ट्रपति बनने की इच्छा पूरी करने के लिए न चाहते हुए भी ऐसा करें। आखिर यह तथ्य है कि अतीत में अमेरिका में दूसरे धर्मों के कई नेता राष्ट्रपति के तब उम्मीदवार बने, जब उन्होंने ईसाइयत को अपना लिया।

अभियान

गुरु और भगवान की तस्वीर एक साथ रखने का रहस्य : वास्तु, शास्त्र और भक्ति का अद्भुत संगम

भारतीय संस्कृति में घर का मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं होता, बल्कि यह वह केंद्र होता है जहाँ से जीवन की ऊर्जा प्रवाहित होती है। कहा गया है कि जिस घर में मंदिर होता है, वह घर नहीं बल्कि एक जीवंत देवालय बन जाता है, जहाँ हर श्वास में ईश्वर की उपस्थिति महसूस होती है। इसलिए वास्तु शास्त्र ने घर के मंदिर के निर्माण, उसकी दिशा, उसमें रखी जाने वाली मूर्तियों, दीप, और तस्वीरों तक के लिए स्पष्ट नियम बताए हैं। मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं, बल्कि उस अदृश्य शक्ति का केंद्र है जो पूरे घर में सकारात्मकता, संतुलन और समृद्धि लाती है।

इसी संदर्भ में एक प्रश्न अक्सर लोगों के मन में उठता है — क्या घर के मंदिर में गुरु और भगवान की तस्वीरें एक साथ रखनी चाहिए? बहुत से लोग अपने आराध्य देव की प्रतिमा के साथ अपने पूज्य गुरु की तस्वीर भी मंदिर में रखते हैं, जबकि कुछ लोग ऐसा करने से हिचकिचाते हैं, यह सोचकर कि कहीं यह अनुचित तो नहीं। परंतु वास्तु शास्त्र और सनातन धर्म दोनों ही इस विषय में अत्यंत गूढ़ और सुंदर दृष्टिकोण रखते हैं।

सनातन परंपरा में गुरु को ईश्वर के समान माना गया है। हमारे शास्त्रों में गुरु को त्रिदेव के स्वरूप में प्रतिष्ठित किया गया है —

"गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णुः गुरु देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥"

अर्थात गुरु ही ब्रह्मा हैं जो ज्ञान की उत्पत्ति करते हैं, गुरु ही विष्णु हैं जो ज्ञान का पालन करते हैं, और गुरु ही महेश हैं जो अज्ञान का नाश करते हैं। इसीलिए गुरु को स्वयं परमात्मा का प्रतिरूप कहा गया है।

जब हम घर के मंदिर में गुरु की तस्वीर रखते हैं, तो यह इस बात का प्रतीक होता है कि हम गुरु को ईश्वर के समान सम्मान दे रहे हैं। वह गुरु ही हैं जो हमें भगवान तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं, हमारे अज्ञान का नाश करते हैं और हमें उस सत्य की ओर ले जाते हैं जहाँ केवल प्रकाश है। इसलिए गुरु की तस्वीर भगवान के साथ रखना न केवल उचित है बल्कि यह घर में आध्यात्मिक ऊर्जा को और भी प्रखर बनाता है।

वास्तु शास्त्र के अनुसार घर के मंदिर में यदि गुरु और भगवान की तस्वीरें एक साथ रखी जाएँ, तो उससे घर में भक्ति और ज्ञान का संतुलन स्थापित होता है। गुरु ज्ञान का प्रतीक हैं और भगवान भक्ति का। जब दोनों साथ होते हैं, तब जीवन में बुद्धि और भाव, दोनों का संगम होता है। घर में ऐसी सकारात्मक तरंगें फैलती हैं जो व्यक्ति के मन से अहंकार, भ्रम और भय को दूर करती हैं।

परंतु साथ ही वास्तु यह भी कहता है कि इन तस्वीरों या मूर्तियों को रखने का एक क्रम होना चाहिए। भगवान की तस्वीर या मूर्ति को गुरु की तस्वीर से थोड़ा ऊँचे स्थान पर रखना चाहिए। इसका तात्पर्य यह नहीं कि गुरु भगवान से छोटे हैं, बल्कि यह उस शाश्वत परंपरा का संकेत है जिसमें गुरु हमें भगवान तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं। गुरु सीढ़ी हैं, भगवान शिखर। सीढ़ी के बिना शिखर तक पहुँचना संभव नहीं, पर सीढ़ी स्वयं शिखर नहीं बन जाती। यह व्यवस्था श्रद्धा और संतुलन की प्रतीक है।

इसके अतिरिक्त वास्तु में यह भी बताया गया है कि गुरु की तस्वीर भगवान के दाहिनी ओर रखी जानी चाहिए। दाहिनी दिशा को पुरुष तत्व और यश की दिशा कहा गया है। जब गुरु की तस्वीर भगवान के दाहिने ओर रखी जाती है, तो यह व्यक्ति के जीवन में कीर्ति, प्रतिष्ठा और सही निर्णय की शक्ति को बढ़ाती है। ऐसा करने से समाज में मान-सम्मान और सफलता प्राप्त होती है।

वास्तु विशेषज्ञ यह भी कहते हैं कि मंदिर की दिशा अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यदि संभव हो तो घर के मंदिर को उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में बनाना चाहिए, क्योंकि यह दिशा देवताओं की मानी जाती है। इसी दिशा से सूर्य की प्रथम किरण प्रवेश करती है, और यही दिशा अध्यात्म तथा ज्ञान की भी दिशा है। जब इस दिशा में गुरु और भगवान दोनों की तस्वीरें स्थापित होती हैं, तो वह स्थान एक शक्तिशाली ऊर्जा केंद्र बन जाता है।

घर के मंदिर में तस्वीरें या मूर्तियाँ बहुत बड़ी या डरावनी मुद्रा वाली नहीं होनी चाहिएं। भगवान और गुरु दोनों की छवियाँ ऐसी हों जिनसे मन में शांति, विनम्रता और श्रद्धा का भाव जागे। मंदिर में हमेशा स्वच्छता, सुगंध और प्रकाश बनाए रखना चाहिए। दीपक जलाने से पहले और बाद में हाथ जोड़कर गुरु और भगवान दोनों को प्रणाम करना चाहिए।

वास्तु के अनुसार जब गुरु और भगवान एक साथ पूजित होते हैं, तो घर में दो शक्तियाँ एक साथ सक्रिय होती हैं — गुरु का ज्ञान-प्रकाश और भगवान की कृपा-ऊर्जा। इन दोनों के संगम से व्यक्ति के जीवन में संतुलन आता है, नकारात्मकता नष्ट होती है और घर में हर दिन नई चेतना का उदय होता है। जो घर इस नियम का पालन करता है, वहां के लोग मानसिक रूप से शांत, निर्णय लेने में सक्षम और जीवन के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण वाले बनते हैं।

कहा भी गया है —

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥"

यह दोहा केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन का सार है। जब गुरु और भगवान दोनों साथ खड़े हों, तब पहले गुरु को प्रणाम करना चाहिए, क्योंकि वही हमें भगवान तक ले जाते हैं। इसी भाव का प्रतीक तब बनता है जब हम घर के मंदिर में गुरु और भगवान दोनों की तस्वीरें एक साथ स्थापित करते हैं।

जब मंदिर में भक्ति और ज्ञान दोनों का संगम होता है, तो वह स्थान केवल पूजा का नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभव का केंद्र बन जाता है। ऐसी जगहों पर बैठने मात्र से मन शांत होता है, विचार स्पष्ट होते हैं और जीवन में दिशा मिलती है। कहा जाता है कि जहां गुरु और भगवान एक साथ पूजित होते हैं, वहां नकारात्मक शक्तियाँ प्रवेश नहीं कर पातीं, क्योंकि वहां की ऊर्जा स्वयं प्रकाशमय होती है।

अंततः यह समझना आवश्यक है कि गुरु और भगवान अलग नहीं हैं। भगवान परम सत्य हैं, और गुरु उस सत्य तक पहुँचने का माध्यम। इसलिए जब घर के मंदिर में गुरु और भगवान दोनों की तस्वीरें एक साथ स्थापित होती हैं, तो यह जीवन में पूर्णता का प्रतीक बनती है। यह केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि उस दिव्य सूत्र का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और भक्ति का संगम मनुष्य को मोक्ष की ओर ले जाता है।

इसलिए यदि आपके घर में मंदिर है, तो निःसंकोच होकर अपने पूज्य गुरु की तस्वीर भगवान के दाहिने ओर रखें। श्रद्धा से, प्रेम से, और पूर्ण विश्वास से। जब आप दोनों को समान भाव से पूजेंगे, तब आपके जीवन में वह संतुलन, वह प्रकाश और वह शांति अवश्य आएगी, जिसे पाने के लिए साधक वर्षों तक तपस्या करते हैं। गुरु का आशीर्वाद और भगवान की कृपा — जब दोनों मिल जाते हैं, तब जीवन स्वयं एक तीर्थ बन जाता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

प्रधानमंत्री 8 नवंबर को वाराणसी का दौरा करेंगे और 4 नई वंदे भारत ट्रेनों को झंडी दिखाएंगे

(जीएनएस)। नई वंदे भारत ट्रेनें यात्रा समय में कमी लाएंगी, क्षेत्रीय गतिशीलता बढ़ाएंगी और कई राज्यों में पर्यटन तथा व्यापार को बढ़ावा देंगी

Posted On: 06 NOV 2025 2:48PM by PIB Delhi

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2186946

भारत की आधुनिक रेल अवसंरचना के विस्तार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 8 नवंबर को सुबह लगभग 8:15 बजे वाराणसी का दौरा करेंगे और चार नई वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को झंडी दिखाएंगे। यह विश्वस्तरीय रेल सेवाओं के माध्यम से नागरिकों को सुगम, त्वरित और अधिक आरामदायक यात्रा प्रदान करने के प्रधानमंत्री के विज़न को साकार करने में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि है। नई वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनें बनारस-खजुराहो, लखनऊ-सहारनपुर, फिरोजपुर-दिल्ली और एर्नाकुलम-बेंगलुरु मार्गों पर चलेंगी। प्रमुख गंतव्यों के बीच यात्रा के समय को उल्लेखनीय रूप से कम करने के जरिए, ये ट्रेनें क्षेत्रीय गतिशीलता में वृद्धि करेंगी, पर्यटन को बढ़ाएंगी और देश भर में आर्थिक कार्यकलापों को बढ़ावा देंगी। बनारस-खजुराहो वंदे भारत एक्सप्रेस इस रूट पर सीधी कनेक्टिविटी प्रदान करेगी और वर्तमान में चल रही विशेष ट्रेनों की तुलना में लगभग 2 घंटे 40 मिनट की बचत करेगी। बनारस-खजुराहो वंदे भारत एक्सप्रेस भारत के कुछ सबसे प्रतिष्ठित धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों, जैसे वाराणसी, प्रयागराज, चित्रकूट और खजुराहो, को जोड़ेगी। यह संपर्क न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देगा, बल्कि तीर्थयात्रियों और यात्रियों को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल खजुराहो तक त्वरित, आधुनिक और आरामदायक यात्रा भी प्रदान करेगा। लखनऊ-सहारनपुर वंदे भारत एक्सप्रेस लगभग 7 घंटे 45 मिनट में यात्रा पूरी करेगी, जिससे यात्रा समय में लगभग 1 घंटे की बचत होगी। लखनऊ-सहारनपुर वंदे भारत एक्सप्रेस से लखनऊ, सीतापुर, शाहजहांपुर, बरेली, मुरादाबाद, बिजनौर और सहारनपुर के यात्रियों को बहुत लाभ होगा, साथ ही रुड़की होते हुए हरिद्वार तक उनकी पहुंच भी बेहतर होगी। मध्य और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सुगम तथा त्वरित अंतर-शहर यात्रा सुनिश्चित करने के ज़रिए, यह सेवा कनेक्टिविटी और क्षेत्रीय विकास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। फिरोजपुर-दिल्ली वंदे भारत इस रूट पर सबसे तेज़ चलने वाली ट्रेन होगी, जो अपनी यात्रा मात्र 6 घंटे 40 मिनट में पूरी कर लेगी। फिरोजपुर-दिल्ली वंदे भारत एक्सप्रेस राष्ट्रीय राजधानी और पंजाब के प्रमुख शहरों, जैसे फिरोजपुर, बठिंडा और पटियाला, के बीच संपर्क को सुदृढ़ करेगी। इस ट्रेन से व्यापार, पर्यटन और रोज़गार के अवसरों को बढ़ावा मिलने, सीमावर्ती क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान देने और राष्ट्रीय बाज़ारों के साथ बेहतर एकीकरण को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। दक्षिण भारत में, एर्नाकुलम-बेंगलुरु वंदे भारत एक्सप्रेस यात्रा समय में 2 घंटे से अधिक की कमी ला देगी, जिससे यह यात्रा 8 घंटे 40 मिनट में पूरी हो जाएगी। एर्नाकुलम-बेंगलुरु वंदे भारत एक्सप्रेस प्रमुख आईटी और वाणिज्यिक केंद्रों को जोड़ेगी, जिससे प्रोफेशनलों, छात्रों और पर्यटकों को तेज़ और अधिक आरामदायक यात्रा का विकल्प मिलेगा। यह रूट केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक के बीच आर्थिक कार्यकलापों और पर्यटन को बढ़ावा देगा, जिससे क्षेत्रीय विकास और सहयोग में सहायता मिलेगी।

भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती, जनजातीय गौरव वर्ष का उत्सव

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल शुक्रवार को अंबाजी से 'जनजातीय गौरव यात्रा' का शुभारंभ कराएंगे

▸▸ 14 आदिजाति जिलों सहित राज्यभर में जन जागृति तथा आदिजाति गौरव के संदेश के साथ जनजातीय गौरव यात्रा का राज्य सरकार का आयोजन

▸▸ 7 से 13 नवंबर तक अंबाजी से एकता नगर तथा उमरगाम से एकता नगर रूट पर यात्रा भ्रमण करेगी

▸▸ रूट पर स्थित गाँवों में रथयात्रा के माध्यम से स्वास्थ्य जाँच शिविर, सेवा सेतु, सामूहिक स्वच्छता सहित सेवाभावी कार्यक्रम जन भागीदारी से आयोजित होंगे

▸▸ अंबाजी में मुख्यमंत्री द्वारा यात्रा के शुभारंभ अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी सहित राज्य मंत्री उपस्थित रहेंगे

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल 7 नवंबर शुक्रवार को आद्यशक्ति धाम अंबाजी से 'जनजातीय गौरव यात्रा' का शुभारंभ कराएंगे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से इस वर्ष आदिवासियों के भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती का उत्सव मनाया जा रहा है। आज की पीढ़ी स्वतंत्रता संग्राम में बिरसा मुंडा की अगुवाई में आदिजातियों के ऐतिहासिक योगदान को जाने-समझे तथा उससे राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा प्राप्त करे; इस उद्देश्य के साथ प्रधानमंत्री के नेतृत्व में इस वर्ष को 'जनजातीय गौरव वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। गुजरात में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के दिशादर्शन में 'जनजातीय गौरव वर्ष उत्सव' अंतर्गत आयोजित हो रही जनजातीय गौरव यात्रा के अंबाजी से शुभारंभ अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी सहित राज्य मंत्री सर्वश्री पी. सी. बरंडा, कमलेशभाई पटेल, प्रवीणभाई माली तथा स्वरूपजी ठाकोर उपस्थित रहेंगे।

यह यात्रा दो स्थानों उत्तर गुजरात के आदिजाति क्षेत्र अंबाजी तथा दक्षिण गुजरात के महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित उमरगाम से 7 से 13 नवंबर तक आयोजित होगी। इस दौरान यह यात्रा 14 आदिजाति जिलों सहित राज्य के विभिन्न जिलों में जन जागृति तथा आदिजाति गौरव के संदेश को जन-जन तक प्रसारित करेगी।

यात्रा के दौरान जनजातीय गौरव रथ जिन गाँवों में जाएगा, वहाँ लोगों द्वारा स्वागत किया जाएगा तथा रात्रि विराम स्थलों पर भगवान बिरसा मुंडा के जीवन चरित्र पर आधारित नाटक मंचन, निदर्शन तथा केन्द्र-राज्य सरकार की योजनागत जानकारी भी लोगों को दी जाएगी। इतना ही नहीं; रथयात्रा के माध्यम से उसके रूट पर स्थित गाँवों में स्वास्थ्य जाँच शिविर, सेवा सेतु, सामूहिक स्वच्छता सहित सेवाभावी कार्यक्रम जन भागीदारी से आयोजित होंगे। बच्चे, युवा तथा समग्र समाज भगवान बिरसा मुंडा के जीवन चरित्र से परिचत हों; ऐसे कार्यक्रम भी इस यात्रा के दौरान आयोजित होंगे।

इसके अलावा; भगवान बिरसा मुंडा के राष्ट्र निर्माण के लिए दिए गए योगदान पर चित्रकला तथा वक्तव्य प्रतियोगिता, नाटक-भवाई तथा उनके जीवन पर व्याख्यान, फिल्म प्रदर्शन भी राज्य सरकार के विभागों द्वारा आयोजित होने वाले हैं।

14 आदिजाति जिलों के अलावा 20 जिलों में भी 13 से 15 नवंबर के दौरान जनजातीय गौरव वर्ष उत्सव के विभिन्न कार्यक्रम होने वाले हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरक उपस्थिति में भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस का राष्ट्रीय स्तर का समारोह डेडियापाडा में देवमोगरा माताजी के सान्निध्य में आयोजित होगा।

राज्य सरकार ने 'विकसित भारत के लिए विकसित गुजरात' का लक्ष्य हासिल करने के लिए दूरदराजी व सुदूरवर्ती गाँवों के प्रत्येक आदिजाति बांधवो को विकास की राह में अग्रसर रखने की मंशा रखी है। मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि यह जनजातीय गौरव रथयात्रा आदिजातियों को विकास की मुख्य धारा में लाकर राष्ट्र निर्माण में जोड़ने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र को साकार करने वाली इस रथयात्रा से जनजातीय गौरव वर्ष के उत्सव को भव्य बनाने तथा भगवान बिरसा मुंडा द्वारा दिए गए 'हमारा देश, हमारा राज' के नारे को आत्मनिर्भर भारत व विकसित भारत के निर्माण से चरितार्थ करने का भी आह्वान किया।

असारवा-कानपुर सेंट्रल साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। रेल प्रशासन द्वारा यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए असारवा-कानपुर सेंट्रल साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के फेरे विस्तारित करने निर्णय लिया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार हैः

ट्रेन संख्या 01906/01905 असारवा-कानपुर सेंट्रल-असारवा साप्ताहिक स्पेशल (6 फेरे)

ट्रेन संख्या 01906 असारवा-कानपुर सेंट्रल स्पेशल जिसे 4 नवंबर 2025 तक अधिसूचित किया गया था अब उसे 25 नवंबर 2025 तक विस्तारित किया गया है। इस तरह ट्रेन संख्या 01905 कानपुर सेंट्रल-असारवा स्पेशल जिसे 3 नवंबर 2025 तक अधिसूचित किया गया था अब उसे 24 नवंबर 2025 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 01906 के विस्तारित फेरों की बुकिंग सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू है। ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

अखिल भारतीय रेल सुरक्षा बल बैडमिंटन प्रतियोगिता 2025 का वडोदरा में आयोजन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के रेल सुरक्षा बल द्वारा वडोदरा के वाघोडिया स्थित स्पोर्ट्स परिसर में 41 वीं अखिल भारतीय रेल सुरक्षा बल बैडमिंटन प्रतियोगिता 2025 का 12 नवंबर, 2025 तक आयोजन किया जा रहा है। इस चैंपियनशिप का शुभारम्भ स्पोर्ट्स परिसर में आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि एवं वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के कर कमलों द्वारा किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि एवं वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने इस अवसर पर अपने स्वागत भाषण में प्रतियोगिता में भाग ले रहे खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी तथा खिलाड़ियों से खेल को खेल भावना से खेलने एवं अनुशासन तथा सम्मान के साथ प्रतिस्पर्धा करने का आवाहन किया। उन्होंने खिलाड़ियों को रेल सुरक्षा बल की गरिमा को ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए प्रेरित किया।

खिलाड़िओं के प्रति अपने स्वागत सम्बोधन में उन्होंने आगे बताया कि इस वर्ष एवं इस प्रतियोगिता की विजेता टीम को ऑल इंडिया पुलिस मीट बैडमिंटन चैंपियनशिप में भाग लेने का गौरव प्राप्त होगा, जो पश्चिम बंगाल में आयोजित की जाएगी।

प्रतियोगिता के आर्गनाइजिंग सेकेट्री एवं मंडल के वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त श्री फ्रांसिस लोबो ने इस प्रतिष्ठित आयोजन की मेजबानी पर ख़ुशी ज़ाहिर करते हुए बताया कि खेल जीवन का अभिन्न अंग है यह न केवल शरीर को स्वस्थ रखता है बल्कि मनोबल और टीम भावना को भी मजबूत करता है। उन्होंने आगे बताया कि इस वर्ष की प्रतियोगिता में 16 क्षेत्रीय रेलवे से कुल 135 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं, जिसमें 8 गैजेटेड ऑफीसर भी है तथा 21 महिला खिलाड़ी एवं 106 अन्य खिलाड़ी सम्मलित है। यह प्रतियोगिता 12 नवंबर तक आयोजित की जा रही है।

150th Birth Anniversary Year of Bhagwan Birsa Munda
JANJATIYA GAURAV VARSH

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

"हर घर स्वदेशी
घर-घर स्वदेशी"

वनबंधु कल्याण योजना
VANBANDHU KALYAN YOJANA

जनजातीय गौरव वर्ष

स्वास्थ्य, सम्मान और स्वरोजगार:
आदिजाति महिलाओं का सर्वांगी उत्कर्ष

श्रेष्ठतम स्वास्थ्य सेवाओं और महिलाओं-बच्चों के लिए कल्याणकारी योजनाओं
द्वारा आदिजाति का उत्थान

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी
द्वारा प्रेरित वनबंधु कल्याण योजना के माध्यम से आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण को प्राथमिकता

माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
के नेतृत्व में गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए निःशुल्क चिकित्सा सहायता

आरोग्य एवं कल्याण योजना की महत्वपूर्ण उपलब्धियां (वर्ष २०२०-२१ से २०२४-२५)

- निक्षय पोषण योजना के अंतर्गत १,१३,५७९ लाभार्थियों को अनुमानित ₹ ३४.८९ करोड़ की सहायता
- ₹ ५३.७६ करोड़ की अनुमानित लागत से गरुडेश्वर, भिलोड़ा, केवड़िया में कुल २७५ बेड की अतिरिक्त सुविधाएँ
- २३ लाख से अधिक लाभार्थियों को आदिजाति क्षेत्रों में १०८ सेवाओं का लाभ
- गोधरा, राजपीपला और नवसारी में GMERS मेडिकल कॉलेज की स्थापना
- सूरत और भरूच में स्व-वित्तपोषित मेडिकल कॉलेज की स्थापना

- व्यक्तिगत आवास सहाय योजना और हलपति आवास सहाय योजना के अंतर्गत २९,०४५ लाभार्थियों को अनुमानित ₹ ३१९.८४ करोड़ की सहायता
- मानव गरिमा योजना के अंतर्गत ४४,९३३ लाभार्थियों को अनुमानित ₹ ७७.७८ करोड़ की सहायता
- 'कुंवरबाई नुं मामेरुं' योजना के अंतर्गत ३५,३६४ लाभार्थियों को ₹ ४२.०० करोड़ की अनुमानित सहायता
- गुजरात आदिवासी विकास निगम द्वारा स्वरोजगार योजना के अंतर्गत ९१२ लाभार्थियों को ₹ २९.१८ करोड़ की आर्थिक सहायता

आदिजाति विकास विभाग, गुजरात सरकार

भारत पर्व : एकता, संस्कृति और सृजनात्मकता के जश्न का मंच

- भारत पर्व में आकर्षण का केंद्र बनी गोवा की नारियल हस्तकला
- समुद्र और नारियल की हस्तकला मेरी पहचान बन गए हैं : विजयदत्ता लोटलीकर, नारियल शिल्प कलाकार
- 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संदेश के साथ भारत पर्व में सुनाई दी गोवा की गूंज
- एकता नगर का भारत पर्व बना सांस्कृतिक एकता और कला के उत्सव का प्रतीक

(जीएनएस)। गांधीनगर : एकता नगर में चल रहे 'भारत पर्व' के अंतर्गत देश की कला, संस्कृति, और हस्तकला की विविधताओं का जीवंत उत्सव मनाया जा रहा है। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर एकता नगर स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में पहली बार आयोजित भारत पर्व में देश का प्रत्येक राज्य अपनी विशिष्ट परंपरा, स्वाद, संगीत और सृजनात्मकता का परिचय दे रहा है। इस सांस्कृतिक उत्सव में गोवा के हस्त शिल्प कलाकार विजयदत्ता लोटलीकर की नारियल के खोल से बनी कलाकृतियां सभी का ध्यान आकर्षित करते हुए तटीय राज्य की पहचान बन गई है।

भारत पर्व में हिस्सा ले रहे नारियल शिल्प कलाकार विजयदत्ता लोटलीकर ने बताया कि एकता नगर में आयोजित भारत पर्व में भाग लेने का अवसर उनके लिए सुखद अनुभव है। यहां गुजरात के लोगों और पर्यटकों का शानदार समर्थन मिल रहा है। सभी लोगों ने हमारे उत्पादों में बहुत अधिक रुचि दिखाई है और जमकर खरीदारी भी की है।

उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किए गए अभियान 'वोकल फॉर लोकल' के माध्यम से स्वदेशी वस्तुओं का एक नया बाजार मिला है। भारत पर्व के जरिए हमें वैश्विक पहचान भी मिली है। उम्मीद है कि भविष्य में यहां हमारा व्यवसाय और अधिक बढ़ेगा। भारत पर्व सचमुच ही विविधता में एकता का प्रतिबिंब है, जहां हर कला, हर बोली और परंपरा साथ मिलकर भारत की एकता और रचनात्मकता की अनूठी झलक प्रदर्शित करती है। हमारे लिए भारत पर्व हस्तकला की परंपरा को आगे बढ़ाने के साथ-साथ रोजगार और गौरव का माध्यम बना है। हमारे लिए एक ही मंच पर भारत की सभी कलाओं को देखना अपने आप में एक उत्सव है।

श्री लोटलीकर ने कहा कि समुद्र और नारियल के हस्तशिल्प मेरी पहचान बन गए हैं। जहां, मिट्टी और लकड़ी से बने शिल्प आम हैं, वहीं हम नारियल के खोल से दीये, आभूषण, बर्तन, लाइट शेड्स, डेकोरेटिव आर्ट की वस्तुओं जैसी अनेक कलाकृतियां बनाते हैं। हमारी हरेक कलाकृति में कारीगरों की रचनात्मकता और पर्यावरण के प्रति संवेदना की झलक दिखाई देती है। स्थानीय और विदेशी आगंतुक इन कृतियों को उत्साह से खरीदकर गोवा की परंपरा को निकट से महसूस कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि देश के तटीय क्षेत्र के कलाकारों की कृतियां भारतीय संस्कृति और परंपरा का प्रतिबिंब हैं। हस्त कलाकार अपने कौशल से रोजगार का सृजन कर रहे हैं और देश के प्रत्येक कोने में बनने वाले स्वदेशी उत्पाद आज दुनिया भर में भारत की पहचान बन रहे हैं। लोटलीकर ने गर्व के साथ बताया कि नारियल हस्तशिल्प ने अब भारत के साथ-साथ विदेशी बाजारों में भी अपनी मांग बनाई है। उनकी कला अब देश की सीमाएं पार कर इंग्लैंड, फ्रांस, अमरीका, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा तक पहुंच चुकी है और वहां से उन्हें कस्टमाइज्ड प्रोडक्ट के ऑर्डर मिल रहे हैं।

विजयदत्ता लोटलीकर को उनकी रचनात्मक कृतियों के लिए वर्ष 2018 में राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुका है, जो उनकी मेहनत औक कला के प्रति समर्पण का प्रतीक है।

एकता पर्व के अंतर्गत आयोजित यह उत्सव 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संदेश को मजबूत बना रहा है। यहां लगाए गए स्टॉलों पर विभिन्न राज्यों की हस्तकला, व्यंजन और लोककलाओं का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

गुजरात के शख्स ने मां की अंतिम इच्छा पूरी कर गांव के 299 किसानों का 99 लाख का कर्ज चुकाया

(जीएनएस)। अमरेली। गुजरात के सावरकुंडला तहसील के जीरा गांव में एक कहानी ने पूरे राज्य और देश को भावुक कर दिया है। कारोबारी बाबूभाई जीरावाला ने अपनी मां की पुण्यतिथि के अवसर पर पूरे गांव के 299 किसानों का बैंक कर्ज चुकाकर उन्हें कर्जमुक्त कर दिया। यह कदम केवल आर्थिक मदद तक सीमित नहीं था, बल्कि किसानों के जीवन में नई आशा और राहत की किरण लेकर आया।

जानकारी के अनुसार, इस गांव के किसानों पर साल 1995 से बैंक का कर्ज बना हुआ था। यह कर्ज जीरा सेवा सहकारी मंडल के तत्कालीन सदस्यों द्वारा किसानों के नाम पर फर्जी तरीके से लिया गया था। वर्षों में यह कर्ज कई गुना बढ़ गया और किसानों के लिए भारी बोझ बन गया। कर्ज की वजह से किसानों को सरकारी सुविधाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा था और कई परिवारों की जमीनों का बंटवारा भी रुक गया था। कई किसान मानसिक और आर्थिक रूप से परेशान थे।

बाबूभाई ने बताया कि उनके गांव में यह समस्या उनके लिए भी हमेशा चिंता का विषय रही। उनकी मां ने जीवनभर इस बात की इच्छा जताई थी कि उनके गहनों के माध्यम से वह गांव के किसानों का कर्ज चुकाना चाहती थीं। मां की इसी अंतिम इच्छा को पूरा करने के लिए बाबूभाई और उनके परिवार ने बैंक अधिकारियों से संपर्क किया और कुल 89,89,209 रुपये बैंक में जमा कर पूरे गांव के किसानों का कर्ज चुकाया।

इस कार्य के दौरान एक छोटा सा कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सभी किसान, बाबूभाई का परिवार और बैंक अधिकारी मौजूद थे। बैंक ने पूरी पेमेंट के बाद किसानों को नो ड्यू सर्टिफिकेट प्रदान किया और 299 किसान कर्जमुक्त हो गए। किसानों की आंखों में खुशी के आंसू थे और पूरे माहौल में भावनात्मक उभार देखा गया। बाबूभाई ने कहा कि यह कदम केवल मां की इच्छा पूरी करने तक सीमित नहीं था, बल्कि यह किसानों को नई जिंदगी की शुरुआत देने और उनके आर्थिक संकट को दूर करने के लिए भी किया गया। उन्होंने बताया कि इस प्रयास से न केवल किसानों की परेशानियां खत्म हुईं, बल्कि पूरे गांव में खुशी और राहत का माहौल पैदा हुआ।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह घटना सच्ची मानवता, सामाजिक जिम्मेदारी और समुदाय की भलाई के लिए प्रेरक उदाहरण है। बाबूभाई का यह कदम यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत प्रयास और समाज के प्रति संवेदनशीलता से बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं। यह कहानी न केवल आर्थिक सहायता की मिसाल है, बल्कि एक ऐसे समाज की ओर इशारा करती है, जहां सहानुभूति और जिम्मेदारी को प्राथमिकता दी जाती है।

वलसाड में अल्प्राजोलम की गुप्त फैक्ट्री का भंडाफोड़, 22 करोड़ की ड्रग्स जब्त, 4 गिरफ्तार

(जीएनएस)। वलसाड। राजस्व खुफिया निदेशालय (DRI) ने गुजरात के वलसाड जिले में अल्प्राजोलम (Alprazolam) नामक मादक पदार्थ बनाने वाली एक गुप्त फैक्ट्री का पर्दाफाश किया है। यह कार्रवाई 'ऑपरेशन व्हाइट कॉड्रन' के तहत की गई, जिसमें लगभग 22 करोड़ रुपये मूल्य की ड्रग्स जब्त की गईं और चार लोगों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार आरोपियों में फाइनेंसर, निर्माता और दवा लेने वाला शामिल हैं।

जानकारी के अनुसार यह फैक्ट्री गुजरात स्टेट हाइवे (SH) 701 से दूर, एक सुनसान इलाके में संचालित की जा रही थी। डीआरआई को विशेष खुफिया सूचना मिली, जिसके बाद अधिकारियों ने फैक्ट्री पर लगातार नजर रखी और 4 नवंबर 2025 को समन्वित छापा मार कार्रवाई की। इस कार्रवाई में पूरी तरह सुसज्जित अवैध निर्माण यूनिट का भंडाफोड़ हुआ।

जब्त किए गए पदार्थ और उपकरणों में 9.55 किलोग्राम तैयार अल्प्राजोलम, 104.15 किलोग्राम अधूरा (सेमी-फिनिश्ड) अल्प्राजोलम और 431 किलोग्राम कच्चा माल शामिल था। कच्चे माल में p-Nitrochlorobenzene, Phosphorous Pentasulfide, Ethyl Acetate और Hydrochloric Acid जैसे रासायनिक पदार्थ शामिल थे। इसके साथ ही फैक्ट्री में औद्योगिक स्तर की उत्पादन इकाई, रिएक्टर, सेंट्रीफ्यूज, इंडस्ट्रियल रेफ्रिजरेशन यूनिट और हीटिंग मेंटल जैसी मशीनें भी मिलीं।

इस ऑपरेशन में चार लोग गिरफ्तार हुए। दो प्रमुख व्यक्ति जो निर्माण और वित्तपोषण से जुड़े थे, उन्हें पकड़ा गया, साथ ही एक कर्मचारी और तेलंगाना से दवा लेने आया एक व्यक्ति भी गिरफ्तार किया गया। प्राथमिक जांच में यह खुलासा हुआ कि तैयार की गई अल्प्राजोलम तेलंगाना भेजी जानी थी, जहां इसे ताड़ी में मिलाने के लिए प्रयोग किया जाना था।

डीआरआई के अनुसार, इसी साल अगस्त 2025 में आंध्र प्रदेश के अच्चुथपुरम (अनकापल्ली ज़िला) में भी अल्प्राजोलम की एक गुप्त फैक्ट्री का भंडाफोड़ किया गया था, जहां से 119.4 किलोग्राम ड्रग्स जब्त की गई थी। इस साल अब तक चार गुप्त ड्रग्स निर्माण इकाइयों का भंडाफोड़ किया जा चुका है।

विशेषज्ञों का कहना है कि इन कार्रवाइयों से न केवल अवैध मादक पदार्थों के प्रसार पर अंकुश लगेगा, बल्कि यह सरकार के नशा मुक्त भारत अभियान और नागरिक सुरक्षा की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम है। डीआरआई की सतर्कता और दक्षता ने यह सुनिश्चित किया कि मादक पदार्थों की यह अवैध खेप समय रहते पकड़ में आ गई और लोगों को गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों से बचाया जा सका।

गुजरात में 9 नवंबर से समर्थन मूल्य पर खरीफ फसलों की खरीद शुरू, किसानों को मिलेगा लाभकारी मूल्य

(जीएनएस)। गांधीनगर। गुजरात सरकार ने किसानों के हित में एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए घोषणा की है कि 9 नवंबर से राज्य में मूंगफली, मूंग, उड़द और सोयाबीन जैसी खरीफ फसलों की समर्थन मूल्य (MSP) पर खरीदी शुरू की जाएगी। यह जानकारी कृषि मंत्री जीतूभाई वाघाणी ने बुधवार को गांधीनगर में मीडिया को दी।

कृषि मंत्री ने बताया कि मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में यह कदम राज्य के किसानों को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य और आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उठाया गया है। उन्होंने कहा कि चालू वर्ष में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में समर्थन मूल्य में उल्लेखनीय वृद्धि की गई है। गत वर्ष की तुलना में इस साल मूंगफली के मूल्य में प्रति क्विंटल 480 रुपए, उड़द में 400 रुपए और सोयाबीन में 436 रुपए की बढ़ोतरी की गई है। मूल्य में बढ़ोतरी के साथ-साथ लाभकारी मूल्य मिलने से किसानों को अधिकतम लाभ मिलेगा।

वाघाणी ने बताया कि राज्य में प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान के तहत चालू सीजन में लगभग 15,000 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य की मूंगफली, सोयाबीन, उड़द और मूंग की खरीदी करने का आयोजन किया गया है। इससे किसानों को अपनी उपज को कम बाजार मूल्य पर बेचने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

राज्य में मूंगफली के बंपर उत्पादन को ध्यान में रखते हुए सरकार ने प्रति किसान 125 मन मूंगफली खरीदने का उदारतम निर्णय लिया है। इसके अलावा, 300 से अधिक खरीद केंद्र राज्य में अनुमोदित किए गए हैं, जहां किसान अपनी फसल समर्थन मूल्य पर बेच सकेंगे। आवश्यकता पड़ने पर इन केंद्रों की संख्या बढ़ाई भी जा सकती है।

भारत सरकार द्वारा खरीफ फसलों की बुवाई से पहले ही समर्थन मूल्य घोषित किया गया था। इसके अनुसार मूंगफली का MSP 7263 रुपए प्रति क्विंटल, मूंग का 8768 रुपए प्रति क्विंटल, उड़द का 7800 रुपए प्रति क्विंटल और सोयाबीन का 5328 रुपए प्रति क्विंटल रखा गया है।

कृषि मंत्री वाघाणी ने कहा कि यह योजना राज्य के किसानों को आर्थिक लाभ और सुरक्षा सुनिश्चित करेगी और उन्हें अपनी मेहनत की पूरी कीमत मिलेगी। इस कदम से किसान अपनी फसल कम मूल्य पर नहीं बेचने के दबाव से मुक्त होंगे और राज्य में खरीफ फसलों की उत्पादकता एवं कृषि विकास को भी बढ़ावा मिलेगा।